IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने की आवश्यकता

[1]Dr. Kiran Sharma

सारांश

माध्यमिक शिक्षा उच्च शिक्षा की तैयारी की आधारशिला है। यदि इसकी नींव कमजोर होगी तो उच्च शिक्षा का भवन कैसे बनेगा। माध्यमिक शिक्षा का सार्वभौमिकरण (यूनिवर्सलाइजेशन ऑफ सैकन्डरी एजुकेशन USE) की चुनौंती का सामना करने के लियें माध्यमिक शिक्षा की परिकल्पना में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता है ।माध्यमिक शिक्षा जो बहुसंख्यक नागरिकों के लिये शिक्षाक्रम में 'टर्मिनस' का कार्य करती है, को यथाशीघ्र सर्वसुलभ और समान रूप से सशक्त व गुणवत्तापरक बनाना व्यक्ति, समाज और देश के हित में है। अतः इसे हमारा राष्ट्रीय दायित्व समझते हुये इसके सार्वजनीकरण एवं गुणात्मकता हेतु हमें सार्थक प्रयास करना होगा। मा0 शिक्षा का सार ऐसे विकसित मनुष्य का सृजन करना है, जो अपने पर्यावरण के साथ रचनात्मक अन्तःक्रिया में कुशल सिद्ध हो, लोगों के गहन अर्न्तमन में निहित संशोधनों और सम्भाव्य शक्तियों को गतिशील, वैज्ञानिक और तर्कसंगत संगठन के माध्यम से जागृत करें, जैसा कि स्वामी विवेकानन्द ने कहा था (शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का निर्माण करना है) और यह शिक्षा में गुणात्मकता से सम्भव है। अतः आवश्यकता है कि शिक्षा में गुणात्मकता का ध्यान देते हुये, माध्यमिक शिक्षा प्रणाली का पुर्नगठन कर इसे सशक्त व अनुपयोगी बनाया जाए। जिससे इस अवस्था में प्रवेश करने वाले किशोर छात्र–छात्राऐं शिक्षणोपरान्त सुयोग्य नागरिक बनकर जीवन में प्रवेश करके समान व राष्ट्र की उन्नति कर सकें।

प्रस्तावनाः– शिक्षा की गुणवत्ता को परिभाषित करना आसान नहीं है, सामान्य अर्थ में गुणवत्ता युक्त शिक्षा का व्यवहारिक अर्थ बच्चों द्वारा बौद्धिक, संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं मनोदैहिक क्षेत्र की विभिन्न दक्षताओं को अर्जित करना है। यह वर्तमान की एक कड़वी सच्चाई है कि सरकारी विद्यालय अपने लगभग 59 प्रतिशत छात्रों को प्राथमिक स्तर पर प्रवेश देते हैं, जिसमें से 35 प्रतिशत छात्र माध्यमिक शिक्षा तक पहुंच पाते हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत गठित किये गये डाटा इन्फॉर्मेशन फोर एजुकेशन (DISE) के अनुसार सिर्फ उच्च प्रवेश संख्या नौवी कक्षा तक छात्रों को कायम करने के बारे में ही सकारात्मक बात होती है।

शिक्षा समाज का प्रेरक बल है और शिक्षक उसकी प्रेरणा। शिक्षा ही मावनीय और नैतिक मूल्यों की स्थापना का सशक्त माध्यम है। मा0 शिक्षा तकनीकी के साथ नैतिकता कौशल और रोजगार को बढावा देने वाली होनी चाहिये। आज माध्यमिक शिक्षा में अत्यधिक कमियां हैं, जो उसकी गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

इसलिये माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता को कायम रखने के लिये अभी भी वास्तविकताओं का अध्ययन करने, फिर उसके अनुसार नीति निर्माण और मोनीटरिंग करने वाले संस्थाओं का निर्माण किया जायें।

माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है। यह प्राथमिक व उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। प्रथमिक शिक्षा सहभागिता, बुनियादी अभावों से मुक्ति के मूल कारक के रूप में कार्य करती है, जबकि माध्यमिक शिक्षा आर्थिक विकास तथा सामाजिक न्याय की स्थापना को सुविधाजनक बनाती है।

उद्देश्यः– वर्तमान में नीति गुणवत्तापरक माध्यमिक शिक्षा 14–18 की आयुवर्ग के सभी युवाओं को उपलब्ध कराने, सुलभ करने और उनके सामर्थ्य को विकसित किये जाने की है। इसमें निम्न उद्देश्य है–

1. माध्यमिक स्तर पर छात्र/छात्राओं में तार्किक क्षमता विकसित करना।
2. विद्यालयों में विश्लेषणात्मक शैली में पढ़ना, लिखना, सिखाना।
3. माध्यमिक स्तर पर छात्र/छात्राओं को ICT व वांछिंत तकनीक का विशेष ज्ञान प्रदान करना।
4. छात्र/छात्राओं में पारस्परिक संवाद व विचारों के आदान प्रदान की उत्कृष्ट क्षमता विकसित करना।
5. माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की विशेष योजनाऐं चलाना।
6. आवास से 5 किमी के भीतर मा0 शिक्षा प्रदान करने के लिये मौजूदा मा0 स्कूलों में अतिरिक्त श्रेणियां खोलना।
7. वर्तमान मा0 स्कूलों का सशक्तिकरण तथा उचित मात्रा में विषय अध्यापको की नियुक्ति।
8. माध्यमिक शिक्षा का स्तर सुधारना जिसमें परिणामस्वरूप बौद्धिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सीख बढ़े।
9. यह सुनिश्चित करना की माध्यमिक शिक्षा ले रहे सभी छात्रों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा मिले।
10. यह ध्यान देना कि बालक लिंग, सामाजिक, आर्थिक असमर्थता या अन्य रुकावटों की वजह से गुणवत्तापूर्ण माध्यमिक शिक्षा से वंचित ना रहे।

माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता मे कमी के कारणः–

1.	विद्यालयों में भौतिक व मानवीय संसाधनों का आभाव	30%
2.	शैक्षणिक योजनाओँ का वास्तविक रुप में लाभ ना मिलना	30%
3.	विषय वस्तु का उत्कृष्ट ना होना	20%
4.	वांछित तकनीकी का शिक्षण प्रक्रिया में सही प्रयोग ना होना	20%
कुल योग		**100%**

मा0 शिक्षा की गुणवत्ता हेतु निम्न चुनौतियों पर ध्यान देना होगा

1. सातवें अखिल भारतीय विद्यालयी शिक्षा सर्वेक्षण NCERT 2002 के अनुसार माध्यमिक शिक्षा में छात्रो का सफल नामांकन 43–82 प्रतिशत था, जबकि प्रथमिक शिक्षा में सफल अनुपात नामांकन 93–32 प्रतिशत था अर्थात 56 प्रतिशत छात्र माध्यमिक शिक्षा से वंचित हैं।
2. कोठारी आयोग 1964–66 ने सुझाव दिया था कि शिक्षा पर आवंटन का 2/3 विद्यालयी शिक्षा एवं 1/3 उच्च शिक्षा पर खर्च किया जाना चाहिये, परन्तु आज शिक्षा पर आवंटित प्रावधान के अर्न्तगत 50 प्रतिशत सर्वाधिक प्राथमिक शिक्षा पर खर्च किया जा रहा है।
3. माध्यमिक शिक्षा आयोग ने माध्यमिक शिक्षा की पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, शिक्षक परीक्षा प्रणाली, शिक्षक–छात्र अन्तक्रिया आदि सम्बन्धित कमियों का उल्लेख किया है, इन्हे दूर किया जाना चाहिये।
4. माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण प्रणाली 'चॉक एण्ड टॉक' विधि तक सीमित ना हो, अध्यापन कार्य केवल व्यवस्था विधि पर आधारित ना हो।
5. माध्यमिक शिक्षा में सृजनात्मकता व जिज्ञासा का पूर्ण अभाव है।
6. माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में प्रचलित शिक्षा प्रणाली एवं मूल्यांकन सिर्फ छात्रों के संज्ञानात्मक विकास तक सीमित है। भावात्मक व क्रियात्मक पक्ष पूर्णतः उपेक्षित है। जिसमें छात्रों की निर्णय शक्ति, तर्क शक्ति, चिंतन शक्ति, कल्पना शक्ति एवं आलोचनात्मक मूल्यांकन का अभाव दिखाई देता है।
7. मा0 स्तर पर प्रचलित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया केवल स्मृति स्तर के शिक्षण तक सीमित है, जो रटने पर बल देती है। इसमें अवबोध, परावर्तन, संश्लेषण विश्लेषण का अभाव दिखाई देता है।

गुणवत्तायुक्त शिक्षा की रुप रेखा निम्नाकिंत क्षेत्रों में विभाजित की जा सकती है।

मा0 व उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा में गुणात्मक सुधार के आयामः–

वर्तमान स्थिति में हमारे देश व प्रदेश में निरन्तर बढ़ती हुई आबादी और प्रारम्भिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के परिणामस्वरुप मा0 स्तर पर छात्र/छात्राओं की संख्या में विगत वर्षों में भारी वृद्धि हुई है। आजादी के समय उत्तर प्रदेश में कुछ मा0 बालक–बालिका विद्यालयों की संख्या मात्र 506 थी तथा पढने वाले छात्र/छात्राओं की संख्या 220 लाख हुआ करती थी, जबकि 11वीं पंचवर्षिय योजना के अन्त में माध्यमिक स्तर पर नामांकन स्थिति और विद्यालयो व शिक्षको की संख्या निम्नवत थीः–

आजादी के समय

1	मा0 स्तर के बालक–बालिका विद्यालयों की संख्या	506
2	पढने वाले छात्र/छात्राओ की संख्या	2.20 लाख

11 वीं पंचवर्षीय योजना के अन्त में मा0 विद्यालयों की संख्या व नामांकन

1	नामांकन कक्षा (9–10) कक्षा (11–12)	 – –	 68.97 लाख 39.47 लाख
2	विद्यालयों की संख्या सरकारी और अनुदानित गैर अनुदानित	 – –	 6,115 13,730
3	शिक्षको की संख्या सरकारी और अनुमानित विद्यालयों में	–	1,14,868

माध्यमिक शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन हेतु कुछ समाधान

वर्तमान समय में केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा मा0 शिक्षा व उच्च माध्यमिक शिक्षा के गुणवत्ता के लिये कदम उठाये जा रहे हैं–

माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने हेतु सर्वव्यापीकरण एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। सर्वशिक्षा अभियान की तर्ज पर राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की अनुप्रयोगात्मक उपादेयता से इंकार नहीं किया जा सकता इसकी गुणवत्ता हेतु कुछ समाधान निम्न हैंः–

1. शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर बालक व बालिका महत्वपूर्ण है। उनका शैक्षणिक विकास उनकी अभिरुचि एवं क्षमता योग्यता के अनुरुप किया जाना चाहिए।

2. प्राथमिक स्तर पर ही विषयवस्तु को महत्व दिया जाना चाहिये। ताकि पाठ्यक्रम हस्तान्तरण में निर्देशात्मक, अनुदेशात्मक शैली का स्थान सृजानात्मक शैली ले सके। जहाँ बच्चे स्वयं नये ज्ञान का सृजन कर सके।

3. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को स्मृति के स्तर से अवबोध स्तर में शिक्षण की तरफ उन्मुख किया जाये।

4. माध्यमिक शिक्षा की शिक्षण पद्धति को सिर्फ 'चॉक एण्ड टॉक' से सूचना व संचार तकनीक (ई–एजुकेशन, टीचिंग एवं लर्निंग) की तरफ प्रतिमान परिवर्तन किया जाये।

5. माध्यमिक शिक्षा को सिर्फ सूचनात्मक सैद्धान्तिक एवं संज्ञानात्मक न बनकर इसे भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों के समन्वित विकास हेतु प्रोत्साहित किया जायें।

6. माध्यमिक विद्यालयों में ट्यूशन और कोचिंग को पूर्णतः प्रतिबन्धित कर शिक्षक छात्रों में कक्षा शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं कार्य संस्कृति विकसित की जाए।

7. माध्यमिक विद्यालयों की परीक्षा पद्धति में परिवर्तन करके 25–40 प्रतिशत लघु उत्तरीय व शेष बहुविकल्पीय प्रश्नों में समाहित कर छात्रों के तनाव को कम किया जाये।

8. भाषा शिक्षण में परस्पर संवाद को महत्व दिया जाये। ताकि शिक्षण के प्रारम्भिक सोपान में ही पढने लिखने का कौशल विकशित हो सकें।

9. माध्यमिक शिक्षा के लिये धन का आवंटन प्रथमिक शिक्षा की भाँति सुनिश्चित किया जाये, क्योकि सर्वशिक्षा अभियान भी माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता से प्रत्यक्षत सम्बन्धित है।

शिक्षा नीतियों की सिफारिशो का आधार पर शिक्षा की गुणवत्ता बढाने हेतु भारत सरकार ने अलग–अलग समय पर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालयों के लिये विभिन्न प्रकार की योजनाऐं प्राप्त की जो निम्न हैं:–

निम्न योजनाओं के माध्यम से केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों द्वारा माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता बढाने की ओर ध्यान दिया जा रहा है।

संदर्भ सूचीः–

पूनम मदान / रामशक्ल पाण्डेय – समसामयिक भारत और शिक्षा

सी0एन0 राव (के0 वेंकट सुब्रमन्यम) – एक लेख सज्जा

https://www.franchiseindia.com

hi.vikaspedia>education>annua